MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Oct. To Dec. 2020
Issue 36, Vol-17

Date of Publication
01 Nov. 2020

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell.07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

13) ज्योत्स्ना आणि ज्योती सामाजिक मनोव्यापारप्रधान नाटक
डॉ. अजय कुळकर्णी, नागपूर ||68

14) भारत – अमेरिका संबंध एक दृष्टिक्षेप
श्री. इंद्रजित भाऊराव जाधव, जि. पुणे ||70

15) ईश्वर अस्तित्व सिध्दीचा सत्ताशास्त्रीय युक्तिवाद
डॉ. सुनील काळमेघ, वरूड ||76

16) उपेक्षित आदिवासी हुतात्मा नाग्या कातकरी
डॉ. श्री. निळकंठ रामचंद्र व्यापारी, जि. ठाणे ||80

17) स्त्री होने की व्यथा 'गुड़िया–भीतर–गुड़िया' आत्मकथा
डॉ.संतोषकुमार लक्ष्मण यशवंतकर, जिला बीड ||82

18) भारत के विदेशी व्यापार की दिशा का एक अध्ययन
प्रो० डॉ० अभय कुमार, पटना (बिहार) ||85

19) स्त्री मुक्ति और अकहानी
डॉ० अमृता कुमारी, समस्तीपुर (बिहार) ||89

20) गायन शैली में श्रीमद्भागवत का वैशिष्ट्य
डॉ. लायका भाटिया, चण्डीगढ ||93

21) परम्पराओं से स्त्री मुक्ति का उपन्यास –अगनपाखी (मैत्रेयी पुष्पा के विशेष संदर्भ में)
डॉ.भगवान रामकिशन कदम, जि.लातूर ||99

22) संविधानिक विकास के विशेष संदर्भ में १९३५ के कानून का परीक्षण
डॉ. घनश्याम सुबराव महाडीक, अमरावती ||102

23) भारतीय महिलाओं की सामाजिक एवं राजनैतिक स्थिति
पूजा कुमारी, दरभंगा ||104

24) हिंदी ललित निबंधों में सांस्कृतिक चिंतन
प्रा.डॉ. दिलीप कॉडीया कसबे , सांगोला ||109

25) शक्तिग्रह में न्यायशास्त्र का अन्य शास्त्रों से भेद
डा. मधुबाला सिंह, दिल्ली ||113

[illegible] आई आणि [illegible] तीन भावंडे आपल्यासाठी कष्ट करीत होते. असताना आई आजारी पडली. अन्न [illegible] देखील पैसा नव्हता. तर औषध कोठून आणणार? आईचा आजार वाढतच होता. [illegible] आई भुकेने भुकेली तडफडत होती. आईनी शेवटचा [illegible] तुम्ही [illegible] आप्पा, आप्पा अई माशासारखी तडफडून तडफडून मेली. ओघळणारे अश्रु पुसत सगळ्यांनी, हिलाप विचारतो" तेव्हा कोठे होता तुमचा राष्ट्र म्हणजे धर्म? कोठे होता देश? आणि कोठे होती तुमची देशसेवा? कुणीच का नाही आले आमच्या मदतीला? पुढे देशाला स्वातंत्र्य मिळाले. लोकराज्य आले. मंत्री, आमदार, खासदार, निवडले गेले. मग तुमच्याच वाट्याला का एखादे पद नाही आले? तुमच्याच देशसेवेची का कुणी कदर नाही केली? आप्पा, तेव्हा मला आणि दादाला जर का स्कॉलरशीप मिळाली नसती आणि आम्ही खडतर जीवनाची तपश्चर्या केली नसती, तर आज आमच्याही नशिबी आली असती फक्त हमाली! हिर्लेकरांनी जरी तो प्रसंग काल्पनिक लिहिला असला तरी गुरं राखणाऱ्या गणपत कातकरी यांच्या रूपाने आज वास्तवतेचे करूण दर्शन घडत आहे.

आतापर्यंत उपेक्षित राहिलेल्या नाग्या कातकरी याना ६८ वर्षानंतर आज मानवंदना दिली जाते. नुसती मानवंदना देऊन भागणार नाही. तर अजूनही चिरनेर येथील हुतात्मा स्मारकावर त्यांचे नाव कोरलेले नाही. ते लवकरात लवकर कोरले पाहिजे व दुसऱ्याकडे गुरं राखणाऱ्या त्यांच्या ६९ वर्षीय वयोवृद्ध मुलांचे सन्मानाने चांगल्याप्रकारे पुनर्वसन केले पाहिजे, हीच खऱ्या अर्थाने नाग्या कातकरी याना मानवंदना ठरेल. अन्यथा त्यांचा आत्मा आपल्याला कधीच माफ करणार नाही.

संदर्भ साधने :—

१) Welling N. L., The katkaris, Bombay, 1934.

२) मराठी विश्वकोश.

17

स्त्री होने की व्यथा 'गुड़िया—भीतर—गुड़िया' आत्मकथा

डॉ.संतोषकुमार लक्ष्मण यशवंतकर
हिंदी विभागाध्यक्ष,
कला व विज्ञान महाविद्यालय,
ता.गेवराई, जिला बीड

****

समकालीन हिंदी साहित्य जगत् में जिन लेखिकाओं का साहित्य पाठकों के रुचि का और आलोचकों के चिन्तन का विषय रहा है उनमें मैत्रेयी पुश्पा का अग्रणी स्थान है । मैत्रेयी अपने उपन्यासों के जरिए स्त्री को स्त्री के, हिस्से के लोकतंत्र की मांग की है । मैत्रेयी का औपन्यासिक रचना संसार जितना सराहा गया उतनी सराहना उनके आत्मकथाओं के दोनों खण्डों की हुई है । ग्रामांचल में बसी मैत्रेयी ने जिस दिलचस्पी तथा प्रामाणिकता के साथ आत्मकथाओं को रचा है वह निश्चित ही बेमिसाल है । आत्मकथा का प्रथम खण्ड 'कस्तूरी कुंडल बसै' काफी चर्चित रहा । द्वितीय खण्ड सन २००८ में 'गुड़िया—भीतर—गुड़िया' शीर्षक से प्रकाशित हुआ । जिसमें आत्मवृतांत के साथ—साथ भारतीय स्त्री की सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक, धार्मिक और आर्थिक दशा और दिशा के वृहद रुप को उद्घाटित किया है ।

भारतीय पितृसत्ताक व्यवस्था में भारतीय स्त्री की स्थिति कितनी सोचनीय और दयनीय है इस ओर पाठकों तथा आलोचकों का ध्यान आकर्षित करती है मैत्रेयी । मैत्रेयी का यह लेखन तथाकथित सामाजिक व्यवस्था से स्वयं को मुक्त करने का संकल्प है — "न मैं धर्म के खिलाफ थी, न नैतिकता के विरुद्ध । मैं तो गलियों से चली आ रही तथाकथित सामाजिक व्यवस्था

MAH MUL/03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta®
Peer-Reviewed International Journal

Oct. To Dec. 2020
Issue-36, Vol-17

से खुद को मुक्त कर रही थी ।'' 'गुड़िया भीतर गुड़िया' आत्मकथा में प्रसंग क्रम को अलग अलग हिस्सों में विभाजित किया है । यह अलग अलग हिस्से प्रसंग क्रम को प्रवाह के समान कथा को आगे बढ़ाते है ।

'गुड़िया भीतर–गुड़िया' शीर्षक से ही स्पष्ट है कि मैत्रेयी गुड़िया के भीतर जो एक और गुड़िया है उससे रु–ब–रु होना चाहती है । उसके जिने का स्वायत्त हक मांगती है । इसी गुड़िया की चेतना ही इस रचना का प्रेरक रुप है । मैत्रेयी निवेदन में इसका संकेत देते लिखती है — ''मैं तो पहले ही माँ के सपनों को रौंदती हुई वैवाहिक जीवन चुनकर खुद उनसे अलग हुई थी । मकसद भी साफ था एक पुरुष साथी मिलने से मेरे रात–दिन सुरक्षित हो जाएंगे । मैं अपने आचरण से पत्नी लेकिन मानसिक स्तर पर जो दखल देने लगती, वह कौन थी ? कौन थी वह जो धीरे–धीरे मुझे विवाह संस्था से विरक्त करती हुई, मैं आसपास देखती किस–किसने तो मेरी दृष्टि बदली और दृष्टिकोण पलटकर रख दिया ।'' शायद यह भीतरवाली गुड़िया मैत्रेयी की माँ कस्तूरी ही होगी । आत्मकथा के प्रथम खण्ड में माँ कस्तूरी बेटी को विवाह के जाल में न फसने की सलाह देती रही पर मैत्रेयी ने नहीं माना । आज मैत्रेयी को लग रहा है कि विवाह एक संस्कार नहीं बल्कि स्त्री के लिए एक दलदल है।

मैत्रेयी की आत्मकथा का प्रत्येक प्रसंग पुरुष मानसिकता, सांस्कृतिक प्रथा, परंपराओं और सामाजिक मान्यताओं पर कड़ा प्रहार है । मैत्रेयी ने आत्मकथा के जरिए भारतीय स्त्री की उस छवि को सामने रखा है जो किसी न किसी तरह पितृसत्तात्मक संस्कृति का शिकार हुई है । पुरुषों को आजादी मिल गई पर स्त्री की आजादी का क्या ? कौन है जो उसके आजादी की बात करेगा — ''उफ ! मेरी जिन्दगी रातभर आजादी की हकदार नहीं, यही बात मेरा कलेजा काटती रहती है ।'' एक ओर पुरुष स्वच्छंद रुप से उड़ते फिरे और स्त्री रातभर आजादी के लिए तरसे आदि प्रश्न मैत्रेयी उपस्थित करती है ।

मैत्रेयी स्त्री होने के कारण कई स्तरों पर बार–बार अपमानित और प्रताड़ित होना पड़ा है । संस्कृति ने पतिव्रत धर्म को निभाने की जिम्मेदारी स्त्री के लिए अनिवार्य शर्त मानी गयी पर मैत्रेयी कहती है कि एक तरफा व्रत कब तक और क्यों — ''यदि कोई पति अपनी पत्नी की कोमल भावनाओं को कुचलकर खत्म करता है तो पत्नी को पतिव्रत के नियमों का उल्लंघन हर हालत में करना होगा ।'' पत्नी पतिव्रत धर्म का पालन करे और पति बेलगाम घूमता रहे । कुल यही रवैया प्रेम करनेवाले के प्रति समाज का रहा है । पुरुष का प्रेम जायज है और स्त्री का प्रेम बदचलनी का रुप। मैत्रेयी सतीत्व धर्म पर भी करारा प्रहार करती हैं हमारे देष में स्त्री की जीते जी कोई दखल नहीं ली जाती पर दुर्भाग्य से पति की चिता पर स्त्री सतित्व को जाने वाली स्त्री स्वर्ग कर्म प्राप्त करेगी जैसी गलत मान्यताएँ हमारे समाज में प्रचलित है आखिर कब तक सतित्व के नाम पर पत्नियाँ चिता पर चढ़ती रहेगी । मैत्रेयी स्वयं के अनुभवों के सहारे समज की उन तमाम तथाकथित मान्यताओं को खारिज करती है । जिन धर्मो, व्रतों पर से स्त्री के वफादारी की अग्नि पीरक्षा बार–बार ली जाती रही है उनका मैत्रेयी विरोध करती है — ''पति का प्रेम.. आह ! मैं गद्दार, कुटिल, बेवफा... सोच रही हूँ .. या करवा चौथ जैसे त्यौहार हमारे वफादार होने की कसौटी है ? पतिवृत्ता का लाइसेंस प्रदान करनेवाले ये त्यौहार, लोकाचार... जिनके द्वारा हमारा सतित्व हर साल रिन्यू होता है ।'' सब कुछ सहने की अपेक्षा स्त्री की ओर से ही की जाती है । नैतिक मर्यादाएँ, सेवा, समर्पण, त्याग, स्त्री के माथे पर थोपे गए है । इस थोपी गई बातों पर मैत्रेयी को सख्त ऐतराज है — ''नैतिकता के मानसिक कष्ट उपर से हुई शर्मिंदगी ढोते–ढोते मौत की इच्छा... हमने पढ–लिखकर अपना वजुद मर्दों के आसरे डाल रखा है । हम अपने पुरुषों के विश्वास पर आत्मविश्वास खोते चले गए है ।''

मैत्रेयी एक डॉक्टर की पत्नी होने के बावजूद घर परिवार में घुटन महसूस करती रही । पति डॉक्टर पर मानसिकता किसी आदिम मानव की मैत्रेयी को तीन बेटियाँ थी। स्वयं तो खुश थी पर समाज हमें मानों निर्धन की तरह देखता था । हमेशा बेटा और बेटी में अन्तर किया जाता है । बेटे का जन्म उत्साह के रुप

में मनाया जाता है । मैत्रेयी लिखती है — "लड़की का जन्म उल्लास का विषय नहीं, उदास है, यह उल्लास नहीं, अभिशाप है ।"

मैत्रेयी के अनुभव किसी लोकगीतों या लोककथाओं से वर्णित स्त्रियों के नहीं बल्कि वह तो स्वयं अपने है । यह अनुभव महानगरों में बसनेवाले सभ्य समाज से मिले है । सभ्य समाज का असली चेहरा स्त्री को लेकर बड़ा ही बदहवास है — "सभ्य और आधुनिक समाज में भी फॅमिली प्लानिंग का रूप है दो बेटे एक बेटी । एक बेटा एक बेटी । दो बेटे तो तो फर्क नहीं पड़ता मगर जैसे ही लड़कियों की संख्या दो हो जाती है, तो लड़के की पुकार तेज होती जाती । न यकीन हो तो जो सिर्फ लड़कियों के माता–पिता है उनके लिए समाज का नजरिया देख लो, अपने विकास वैभव के बाद भी वे निसंतान माता की तरह देखे जाते है ।" तीन बेटियों की माँ बनी मैत्रेयी को बेटा न होने से सास, ससुर और समाज के तिरस्कार, उपेक्षा और अवमानना को सहना पड़ता है, वहाँ अनपढ़ गवाँर स्त्री की स्थिति कैसी होगी इस पर प्रश्न चिन्ह है।

मैत्रेयी आलोच्य आत्मकथा में उन कटु अनुभवों को व्यक्त करती है जो उच्च शिक्षित डॉक्टर पति की ओर से मिले है । स्वयं को जो सम्मान मिला वह स्त्रित्व की अस्मिता को, उपने हक्क को, अपने अधिकारों को भूलने के कारण मिला । यदि मैं अपने अन्दर की आँग को न भूलती तो काश आज दर–दर की ठोकरे खा रही होती। डॉक्टर की पत्नी होने के बावजूद कई बार अपमानित होती रही हूँ — "मेरी भाषा का रूप सिर्फ आँसु है । मेरे पति की इच्छा इस इच्छा में मेरा दखल भी क्या है ? सिनेमा, पार्टी, मंदिर और बाजार तक मैं गाड़ी में बैठकर जाती हूँ तब मैं नहीं जाती डॉक्टर साहब की धर्म पत्नी जाती है।"

आलोच्य आत्मकथा में मैत्रेयी ने साहित्यिक जगत के अनुभव का विस्तार से वर्णित किया है । मैत्रेयी का साहित्यिक जगत में आगमन 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' की कहानी प्रतियोगिता के रूप में हुआ । प्रारंभ में कहानियाँ छपाने के लिए संपादकों की अवमानना और उपेक्षा का शिकार होना पड़ा । मैत्रेयी यह अनुभव कर चुकी है स्त्री चाहे कितनी भी प्रगति करे, चाहे सफलता की चोटी पर पहुँचे, चाहे वह सृजनशील रचनाकार बने बावजूद इसके पुरुष की नजर में वह केवल भुक्त भोगी ही है । हिंदी के जाने माने कथाकार एवं संपादक राजेंद्र यादव और मैत्रेयी के आपसी संबंधों को लेकर लिखनेवालों ने मनगढंत कहानी गढ़ डाली, मैत्रेयी जानती थी कि हमारा सभ्य समाज एक स्त्री और पुरुष के बीच केवल और केवल एक ही रिश्ता देख लेता है । मैत्रेयी के पति भी इनके रिश्ते के संदर्भ में संदेह की निगाह रखे हुए थे । पर मैत्रेयी इन सारी उपेक्षा, अपमान, यातनाओं से त्रस्त होकर अपने लेखन से लबरेज नहीं होनेवाली थी ।

भारतीय समाज में जहाँ औरत के लिए सुरक्षा के नाम पर सामंती व्यवस्था आज भी है । जहाँ पुरुष वर्चस्व के दायरे में रहती हुई स्त्री, खेत–खलिहान में जी–जान से मेहनत करती है, बावजूद इसके पुरुष की यह साजिश रही है कि स्त्री के लिए सुरक्षा के इन्तेजामात जरुरी है । सुरक्षा के लिए पतिवृत्त धर्म नैतिकता, मर्यादाएँ आदि मूल्यों को बनाया है । मैत्रेयी इन मूल्यों का स्त्री जीवन व्यवस्था के विपरित सिद्ध करती है — "हाँ मैं भी इस सत्य को दुनिया के सामने लाना चाहती हूँ कि स्त्री के लिए शास्त्रों द्वारा दी गई नैतिक संस्कृति बनाए गए जीवन मूल्य और शुचिता का पाठ हमारी सक्रिय जिंदगी के अनुरुप नहीं, क्योंकि पुरुष जाति ही इसे खण्ड–खण्ड तोड डालती है । मर्दानगी ही हमारी शुचिता को क्षत–विक्षत करती है।"

मैत्रेयी की यह आत्मकथा स्त्रीवादी साहित्य की चिंतन परक रचना मानी जा सकती है । एक ओर मैत्रेयी अपने नीजी अनुभवों को बड़े साहस और धैर्य के साथ व्यक्त करती है । इन नीजि अनुभवों को स्व.पर से निकालकर सर्वव्यापक बना डालती है इस स्थिति पर व्यक्त विचार प्रत्येक स्त्री को अपने लगने लगते हैं । मैत्रेयी को मिली यातना, तिरस्कार, उपेक्षा तमाम भारतीय नारी के दैनिक जीवन का कटु सत्य है। स्त्री के हक्क, अधिकार, समानता, तथा उसके लोकतंत्र की माँग मैत्रेयी ने इस आत्मकथा के जरिए की है ।

MAHMUL03051/2012
ISSN: 2319 9318

Vidyawarta® Peer Reviewed International Journal

Oct. To Dec. 2020
Issue 36, Vol 17

आत्मकथा की भाषा शैली अत्यन्त मार्मिक एवं उतनी ही विचारोत्तेजक और चिंतन के लिए बाध्य करनेवाली है । लोकगीतों, लोककथाओं की भाषा रचना को रोचक बनाती है । मैत्रेयी परम्परागत पुरुष वर्चस्व की भाषा को नकारकर नई स्त्रीवादी भाषा को अपनाती है ।

संदर्भ ग्रंथ

१. सपना दीक्षित तथा, मैत्रेयी पुष्पा : तथ्य और सत्य, कमलाप्रसाद, अति रूपो स्रोत, पृ.सं. ९९

२ पुष्पा मैत्रेयी, गुड़िया भीतर गुड़िया, निवेदन से उद्धृत

३ पुष्पा मैत्रेयी, गुड़िया भीतर गुड़िया, पृ.सं. ६७

४ पुष्पा मैत्रेयी, गुड़िया भीतर गुड़िया, पृ.सं. १५

५ पुष्पा मैत्रेयी, गुड़िया भीतर गुड़िया, पृ.सं. २४५

६ पुष्पा मैत्रेयी, गुड़िया भीतर गुड़िया, पृ.सं. ३८८

७ पुष्पा मैत्रेयी, गुड़िया भीतर गुड़िया, पृ.सं. १०८

८.पुष्पा मैत्रेयी, गुड़िया भीतर गुड़िया, पृ.सं. ९५

९.पुष्पा मैत्रेयी, गुड़िया भीतर गुड़िया, पृ.सं. १९६

१०.पुष्पा मैत्रेयी, गुड़िया भीतर गुड़िया, पृ.सं. ३२७

□□□

18

भारत के विदेशी व्यापार की दिशा का एक अध्ययन

प्रो० डॉ० अभय कुमार
सहायक प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग,
एल.पी. शाही कॉलेज, पटना (बिहार)
पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय

भूमिका:–

वर्तमान समय में भारत के विदेशी व्यापार की दिशा का अध्ययन आवश्यक हो गया है। नब्बे के दशक में भारत के विदेशी व्यापार में आशातीत विकास हुआ । भारत के निर्यात ढांचे में परिवर्तन हुए । भारतीय अर्थव्यवस्था का विविधीकरण हुआ और गैर– पारम्परिक निर्यात का महत्व बढ़ गया । परिणामतः कृषि–वस्तुओं के निर्यात पर प्रभाव पड़ा । उदाहरण के तौर पर रूई से बने कपड़े, धागा, चमड़ा और चमड़े की निर्मित वस्तुओं के निर्यात में आशातीत विकास हुआ । भारत में विदेशी व्यापार का क्षेत्रीय दिशा (Regional direction) का अध्ययन करने के लिए विश्व को मोटे तौर पर चार बड़े भागों में बांट देना उचित होगा अर्थात अमेरिका, यूरोप, एशिया एवं ओशनिया (Oceania) और अफ्रीका । जहाँ तक अमेरिका महाद्वीप का सम्बन्ध है, भारत के उत्तरी अमेरिका के साथ जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा शामिल है, घनिष्ठ व्यापारिक सम्बन्ध है । हमारे विदेशी व्यापार में लैटिन अमेरिका के देशों और अन्य अमरीकी देशों का कोई महत्वपूर्ण स्थान नहीं रहा था और न ही यह विकसित हुआ ।

विदेशी व्यापार की दिशा :

भारत १९५४–५५ में अमेरिका को अपने कुल निर्यात का २८ प्रतिशत भेजता था जिसमें से २१ प्रतिशत उत्तरी अमेरिका को और ६.७ प्रतिशत लैटिन